के बारे में सही–सही समझना होगा। तब ही इनकी जनसंख्या ह्रास पर शायद अंकुश लग सकेगा और हम उनके विकास और कल्याण की सही दिशा में सोचते उनके साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व बनाए रखने में सफल हो पाएंगे। इसके लिए कुछ जरूरी बातों को समझना जरूरी है।

इन द्वीपों तक सीमित यहां के आदिम जनजाति के कबीलों के मन में सदियों से बाहरी दुनिया के प्रति अलगाव पलत रहा है, ऐसे में जब इन्हें ही बाहरी दुनिया में आने के लिए मजबूर होना पड़ा, तो इनके अंदर चलने वाली प्रतिक्रिया का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। उनका मन कहीं न कहीं से जरूर आहत हुआ होगा। इसे समझते हुए उनके साथ ऐसा व्यवहार होना जरूरी है, इससे उनके आहतमन पर मरहम लग सके।

अनुवांशिकीय कारणों के अलावा आस–पास की परिस्थितियों के अनुसार ही स्वभाव निर्मित होता है। अतः कुछ कबीले के लोग उग्र स्वभाव के तो कुछ शांत व शर्मिले स्वभाव के हो सकते हैं। उनके स्वभाव के अनुसार ही हमें अपने आप को उनके समझ प्रस्तुत करने के लिए तैयार करना होगा। ताकि उन्हें भी हमारा स्वागत करने में हिचक न हो।

स्वभाव, मानसिकता का आईना है। स्वभाव के अनुसार ही मानव व्यवहार करता है। हमें यह ध्यान होगा कि उन्हें यह ऐहसास न हो पाए कि उन्हें आधुनिक मानव द्वारा उपेक्षित और अजायबघर के प्राणी की तरह समझा जा रहा है। उन्हें लगना चाहिए कि उनकी भावनाओं का ध्यान रखा जा रहा है, जो मैत्री के लिए एक जरूरी तत्व है।

अपनी दुनिया में इन्हें जो पंसद था वे हासिल कर लेत थे। पर अब जब वे अपनी दुनिया से बाहर निकल आए हैं तो बदले महौल में अपनी पंसद और नापसंद के लिए बाहरी लोगों पर उनका आश्रित होना लाज़मी है। इन दिनों